श्री दुर्गा स्तुति

दूसरा अध्याय

दुर्गा पाठ का दूसरा शुरू करूं अध्याय
जिसके सुनने पढ़ने से सब संकट मिट जाय
मेधा ऋषी बोले तभी, सुन राजन धर ध्यान
भगवती देवी कीं कथा, करे सब का कल्याण

देव असुर भयो युद्ध अपारा, महिषासुर दैतन सरदारा
योद्धाबली इंद्से भिरयो, लड़योवर्ष शतरण ते न फिरयो
देव सैना तब भागी भाई, महिषासुर इंद्रासन पाई
देवब्रह्मा सब करे पुकारा, असुरराज लियोछीन हमारा
ब्रह्मा देवन संग पधारे, आए विष्णु शंकर द्ववारे
कहा कथा भर नैन्न नीरा, प्रभु देत असुर बहु पीरा
सुन शंकर विष्णु अकुलाए, भवें मन कोध बढ़ाए
नैन भये त्रयदेवकेलाला मुखन ते निकलयो तेजविशाला

दोहा :-तब त्रयदेव के अंगों से निकला तेज अपार
जिनकी ज्वाला से हुआ उज्जवल सब संसार

सभी तेज ईंकजां मिलजाईं, अतुल तेज बल परयो लखाईं
ताही तेज सो प्रगटी नारी, देंख देव सब भयो सुखारी
शिव कें तेज न मुख उपजायो, धर्म तेज ने केश बनायो
विष्णु तेज से बनी भुजाएं, कुच में चंदा तेज समाए
नासिका तेज कुबेर बनाई, अग्नि तेज त्रयनेत्र समाई
ब्रहम तेज प्रकाश फैलाए, रवि तेज ने हाथ बनाए
तेज प्रजापित दांत उहजाए, श्रवण तेज वायु से पाए

सब देवन जब तेज मिलाया, शिवा ने दुर्गा नाम धराया

दोहा :- अट्टहास कर गर्जी जब, दुर्गा आध भवानी
सब देवन नें शक्ति यह माता करके मानी

शम्भु ने त्रयशूल, चक्र विष्णु नें दींना
अग्नि से शक्ति और शँख वर्ण सें लीना
धनुष, बाण, तरकश, वायु ने भेंट चड़ाया
सागर नें रतनो का मां को हार पहनाया
सूर्य ने सव रोम किये रोशन माता के
ब्रज दिया इंद्र ने हाथ में जगदाता के

ऐरावत ने गले की घंटी ही दे डारी
सिंह हिमालया नें दीना करने को सवारी
काल ने अपना खड़ग दिया फिर सींस निवाई
ब्रहमा जी ने दिया कमण्डल भेंट चढ़ाई
विश्वकर्मा ने अदभुत इक परसा दे दींना
शेषनाग ने छत्र माता की भेंटा कीना
वस्त्र आभूशण नाना भांति देवन पहराए
रत्न जड़ित मैय्या के सिर मुकुट सुहाए

दोहा :-आदि भवानि ने सुनी देवन विनय पुकार
असुरो के संघार कों हुई सिंह असवार
रण चण्डी ज्वाला बनी हाथ लिए हथ्यार
सब देवों ने मिल तभी कीनी जै जै कार

चली सिंह चढ़ दुर्गा भवानी, देंव सैना को साथ लिये
सब हथ्यार सजाए रण कें अति भयानक रूप किये

महिषासुर राक्षस ने जब यह समाचार उनका पाया
लेंकर असुरों कीं सैना जल्दी रण-भूमि में आया
दोनों दल जब हुए सामन रण-भूमि में लड़ने लगे
क्रोधित हो रण चण्डी चली लाशों पर लाशें पड़ने लगे
भगवती का यह रूप देख असुरों के दिल थे कांप रहे
लड़ने से घबराते थे, कुछ भाग गये कुछ हांफ रहे
असुर के साथ करोड़ों हाथी घोड़ सैना में आए
देख के दल महिशासुर का व्याकुल हो देवता घबराए
रण चण्डी ने दशों दिशाओं में वोह हाथ फैलाए थे
युद्ध भूमि में लाखों दैत्यों के सिर काट गिराए थें
देवों की सैना भाग उठी रह गई अकेली दुर्गा ही
महिषासुर सैना सहित ललकारता आगे बड़ा तभी
उस दुर्गा अष्टभुजी मां ने रण भूमि में लम्बे सांस लिए
श्वास श्वास में अम्बा जी ने लाखों ही गण प्रगट किए
बलशाली गण बड़े वो आगे सजे सभी हथ्यारों से
गूंज उठा आकाश तभी माता के जै जै कारों से
पृथ्वी पर असुरों के लहू की लाल नदी बहती थी
बच नहीं सकता दैत्य कोई ललकारके देवी कहती थीं

लकड़ी के ढेरों को अग्नि जैसे भस्म बनाती है
वैसे ही शक्ति की शक्ति दैत्य मिटाती जाती है

सिंह चढ़ी दुर्गा ने पल में दैत्यों का संहार किया
पुष्प देवों ने बरसाए माता का जै जै कार किया
'चमन ' जो श्रद्धा प्रेम से दुर्गा पाठ को पढ़ता जाएगा
दुःखों से वह रहेगा बचता मनवांछित फल पाएगा

दोहा :-हुआ समाप्त दूसरा दुर्गा पाठ अध्याय

'चमन ' भवानी की दया, सुख सम्पति घर आए।